Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ हरतालिका तीज व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ हरतालिका तीज व्रत कथा ॥

देवी पार्वती और भगवान शिव से जुड़ी प्रचलित व्रत-कथा का सरल हिंदी रूपांतरण। क्षेत्र और परिवार के अनुसार कथा के शब्द और प्रसंग अलग हो सकते हैं।

पौराणिक कथा के अनुसार, पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती बचपन से भगवान शिव को अपने जीवनसाथी के रूप में चाहती थीं। उन्होंने इस संकल्प के साथ लंबे समय तक तप और आराधना की। ऋतुएँ बदलती रहीं, पर उनका मन अपने निश्चय से नहीं डिगा।

एक दिन देवर्षि नारद हिमालय के पास आए। कथा में वर्णन मिलता है कि उन्होंने भगवान विष्णु से पार्वती के विवाह का प्रस्ताव रखा। हिमालय ने इसे अत्यंत सम्मान की बात समझकर सहमति दे दी। जब पार्वती को यह समाचार मिला तो वे बहुत व्यथित हुईं, क्योंकि उनके मन में शिव को पाने का संकल्प था।

पार्वती ने अपनी प्रिय सखी से मन की बात कही। सखी ने उनकी इच्छा और निश्चय को समझा और उन्हें घर से दूर एक शांत वन में ले गई। वहाँ पार्वती ने एकांत में रहकर शिव की उपासना जारी रखने का निर्णय किया। लोक-व्याख्या में सखी द्वारा पार्वती को ले जाने के प्रसंग से इस पर्व का नाम ‘हरतालिका’ जुड़ा माना जाता है।

HargharPanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ वन में पार्वती का शिव पूजन ॥

वन में पार्वती ने भाद्रपद शुक्ल तृतीया के अवसर पर रेत या मिट्टी से शिव का प्रतीक बनाकर पूजा की। उन्होंने पुष्प-पत्तों और उपलब्ध सामग्री से आराधना की तथा मन में शिव का स्मरण किया। कुछ प्रचलित रूपों में उस रात्रि जागरण, भजन और प्रार्थना का भी वर्णन है।

कथा कहती है कि उनकी अटल श्रद्धा से भगवान शिव प्रसन्न हुए और उनके सामने प्रकट हुए। पार्वती ने अपनी इच्छा कही। शिव ने उन्हें अपनी अर्धांगिनी के रूप में स्वीकार करने का वचन दिया। इस प्रकार उनका संकल्प सफल हुआ। पार्वती ने शिव को प्रणाम किया और अपनी सखी का भी आभार माना।

उधर हिमालय अपनी पुत्री को न पाकर चिंतित थे। खोजते हुए वे वन पहुँचे। पार्वती ने उन्हें अपना निर्णय बताया और शिव से मिले आशीर्वाद का उल्लेख किया। हिमालय ने उनकी बात सुनी और अंततः शिव-पार्वती के विवाह के लिए सहमति दी। कथा का समापन उनके शुभ मिलन से होता है।

कथा का भाव

हरतालिका की कथा श्रद्धा, मित्रता और अपने संकल्प के प्रति दृढ़ रहने की प्रेरणा देती है। भक्त इस अवसर पर शिव-पार्वती से परिवार में सम्मान, प्रेम और मंगल की प्रार्थना करते हैं। कथा धार्मिक विश्वास का विषय है; इसे किसी के विवाह या स्वास्थ्य के निश्चित परिणाम का वादा न समझें।

॥ ॐ नमः शिवाय ॥